This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

छः पैसे का रुपैया

;जन नाट्य मंचऋ फ़रवरी १९९२ऋ ३० मिनटऋ ८ कलाकार!ध्द

पात्र विभाजन

१. दवावाला
२. रुपैया
३. शहरी-१ / मज़दूर नेता / चाची
४. शहरी-२ / प्रधानमंत्री आओ / सुरेश
५. शहरी-३ / वित्तमंत्री / लाला
६. शहरी-४ / आई.एम. एफ़ळ. / अफ़ळसर / पंडित
७. शहरी-५ / बाबूजी / टिकटवाला / बाप
८. शहरी-६ / मंजू

[सड़क छाप दवा बेचनेवाले का प्रवेश। कंधे पर एक झोला और हाथ में एक शीशी है। बाव़ळी पात्र आकर ध्यान से सुनते हैं।]

दवावाला : हां तो साहेबान, मेहरबान, व़ळदरदान, बच्चे, बूढ़े और जवान। माता, बहिना और भैया, माशूव़ळ, जानम और संईया। बाबू, चपरासी और साहेबान ज़रा लगाकर सुनना ध्यान। अदना सा बंदा हूं, नाम है अरमान। आज वेळ दौर में महंगी हुई है रोटी। बाबूजी वेळ तन से उतर गई है कोटी। मजूरे वेळ पास रह गई सिर्फ़ळ लंगोटी। शोर मचा नहीं सकते, नज़र आती है पुलिस की सोटी। तो आप यही कहेंगे न, अपनी तव़ळदीर है खोटी। पर जनाब दाद दीजिए इस अरमान को, जो आज हुआ न कल कर डाला सब परेशानियों का हल। कर डाला है यह काम महान, ईजाद कर दिया है यह रामबाण। रामबाण-रामबाण-रामबाण। आपको भूख सताती है, रोटी की याद आती है, प्याज़ की चटनी भाती है? आम का अचार सुहाता है? मुंह में पानी भर आता है? निराश मत होइए, दो बूंद रामबाण मुंह में टपकाइए, मुनसिपालटी का नल सूखा हो तो थूक वेळ साथ गटक जाइए। आपको भूख कभी न सताएगी, जंगली सांड की सी ताव़ळत आ जाएगी। ख़बरदार! मेरी दवा को स्मैक, हसीस या चरस न समझना और न ही देसी ठर्रा या सुर्रा। यह इस नाचीज़ अरमान की ईजाद है। साइंटिफ़िळक फ़ळारमूले से बनाई हुई है। व़ळीमत वेळवल १ रुपया, १ रुपया, १ रुपया। क्या कहा? यह हव़ळीव़ळत नहीं खेल है। अरे जनाब इसवेळ आगे तो सब दवाएं पेळल हैं। करोसीन, डिस्परिन, टेरामाइसिन, गेरामाइसिन, अरालगन, बरालगन, पेंटागन, स्टेनगन, मशीनगन सब पेळल। वैसे भी आप इतनी महंगी दवाएं कहां से लाएंगे। वर्ल्ड बैंक भी यही कहता है दवाएं महंगी करो आबादी अपने आप कम हो जाएगी। इसलिए जनाब पेश करता हूं यह शीशी, *[एक पात्र शीशी ख़रीदता है।]* लिमिटेड स्टॉक है, जो पहले आए पहले पाए। आइए बहिनजी, आइए भाईसाहब, आइए मेरे बुर्ज़ुगवार। आ, आ, आ, *[पेट पकड़कर गिर जाता है, बाव़ळी पात्र उसकी ओर दौड़ते हैं।]*

शहरी-१ : अरे इसे क्या हो गया?

शहरी-२ : तमाशा कर रहा होगा।

शहरी-३ : भैयाजी आप अपनी जेब की फ़िळक्र कीजिए।

शहरी-४ : उसमें है ही क्या जो ले जाएगा? पछताएगा। बिजली का बिल है वो ही चुकाएगा।

शहरी-५ : अबे तुझे अपनी जेब की पड़ी है। देखता नहीं यह दर्द से बिलबिला रहा है। क्या हुआ भाई?

दवावाला : *;पेट पकड़करध्द* भूख, दर्द! *;इशारे से खाना मांगता हैध्द*

शहरी-२ : भूख लगी है तो रामबाण क्यूं नहीं पीता?

दवावाला : दवा मरीज़ों वेळ लिए होती है। डॉक्टरों वेळ लिए नहीं। मुझे भूख लगी है।

शहरी-१ : तो रामबाण क्यों बेचता है?

दवावाला : पैसा कमाने वेळ लिए। पैसों वेळ बिना रोटी वैळसे आएगी?

शहरी-६ : तो अपना रामबाण पी।

दवावाला : भूख का इलाज रोटी है। रामबाण-वामबाण वुळछ नहीं।

शहरी-३ : तो रामबाण धोखा था। चूतिया बनाता है साला।

शहरी-४ : मारो साले को *[सब उसे मारते हैं। दवावाला खुद को बचाता है।]*

दवावाला : मत मारो मुझे। माफ़ळ कर दो भई मैंने पेट की ख़ातिर

झूठ बोला है। *;जनता सेल्फ़* और फिर आज वेळ ज़माने में कौन झूठ नहीं बोलता है। दुकानदार, थानेदार, सरमायेदार, बाबू, अफ़ळसर, सरकार। सब झूठ बोलते हैं साले। *फ्रीज़ होता है। एक पात्र नारे लगाता है। बाक़ळी पात्र उसवेळ पीछे जुलूस बनाकर चलते हैं। मज़दूरों की सभा बनती है।*

नारे : महंगाई को दूर करो, हमको सस्ता राशन दो
जमाख़ोरी को ख़त्म करो, गांव-गांव में राशन दो।

मज़दूर नेता : साथियो नरसिम्हा राव सरकार की नीतियों वेळ कारण बढ़ी महंगाई ने, हमारे घरेलू बजट पर ज़बर्दस्त हमला कर दिया है। खाने-पीने, पहनने, रहने, बच्चों की शिक्षा आदि में तंगी महसूस करते हैं। पिछले एक साल में हमारी आमदनी, ख़रीदारी वेळ लिहाज़ से काफ़ळी कम हो गई है। सरकार ने राशन वेळ दाम से लेकर बच्चों की फ़ळीस, बसों का किराया, रेल का भाड़ा सभी वुळछ बढ़ा दिया है। नौकरी से बाहर करने की नीति अपनाकर सरकार ने हज़ारों कर्मचारियों को फ़ळालतू घोषित कर दिया है। साथियो इस महंगाई और सरकार की जनविरोधी नीतियों वेळ ख़िलाफ़ळ हमें लड़ना होगा। मेरे साथ नारा लगाइए...

दवावाला : *;टोकता हैल्फ़* बंद करो बवळवास। बहकाते हैं हमें, तुम लोगों की वजह से ही मुझे नौकरी से निकाला गया है।

मज़दूर नेता : हमारी वजह से?

दवावाला : हां तुम्हारी वजह से ही हड़ताल करवा दी सालों ने। मेरी भी छंटनी हो गई। कहते थे संघर्ष करो। संघर्ष करो तो भूखों मरो। मुझे झूठ बोलकर पेट पालने पर मजबूर कर दिया। दो पैसे वेळ लिए जूते खाने की नौबत आ गई। पैसे की ख़ातिर क्या वुळछ नहीं करना पड़ता। *रुपैया आता है*

रुपैया : ए मिस्टर क्या बवळवास लगा रखी है?

दवावाला : आप कौन हैं, आपकी तारीफ़ळ?

रुपैया : अपनी तारीफ़ळ तो बाद में बताऊंगा। यह बताओ कि यह क्या मजमा लगा रखा है?

शहरी : यह सबको बेववूळफ़ळ बना रहा है। दवा वेळ नाम से जाने क्या अंटशंट बेच रहा है।

दवावाला : मगर मैं तो पहले ही सबसे माफ़ळी मांग चुका हूं। *;सब डांटते हैं।ल्फ़* आप ही समझाइए न इन सबको।

रुपैया : मैं चोरी की कमाई करने वालों से बात नहीं करता।

दवावाला : बड़े भाई, उस्ताद, मालिक, गुरु मुझे माफ़ळ कर दो यह हरकत मैंने पहली बार की है। कान पकड़ता हूं, ऐसी ग़लती फिर नहीं करूंगा। मैं तो अच्छा भला एक फ़ैळक्ट्री में मजूरी करता था। *;रुपये सेल्फ़* पर तुम कौन हो?

शहरी : हां-हां तुम हो कौन?

रुपैया : बता दूं?

शहरी : हां, हां बताओ।

रुपैया : *;गाता हैल्फ़* हर गली वेळ मोड़ की पान की दुकान में,
मज़दूर की झोपड़ी में, बाबू वेळ मकान में,
साड़ी वेळ पल्लू में, कोट की जेब में,
दहवळां की मेहनत में, लाले वेळ फ़ळरेब में,
बस रहा हूं मैं, पल रहा हूं मैं...
दौड़ता हूं मैं, चल रहा हूं मैं...
मैं हूं एक नोट, मैं हूं एक नोट।
इक रुपये का, इक रुपये का, इक रुपये का नोट।
पिछले चालीस साल वेळ इस हिंदुस्तान में
आशाओं, सपनों की दुनिया भी ढह गई
घिसते-घिसते हो गई इतनी मलट
सिर्फ़ळ चार पैसे की यह अठन्नी रह गई।
कट रहा हूं मैं, छंट रहा हूं मैं,
दिनों दिन इस वळदर घट रहा हूं मैं,
मैं हूं एक नोट, मैं हूं एक नोट।
इक रुपये का, इक रुपये का, इक रुपये का नोट

रुपये और दवावाले को छोड़कर सभी पात्र बाहर चले जाते हैं।

दवावाला : अरे भई! क्या बात है। बहुत दिनों वेळ बाद मिले हो। अगर पहले मिल जाते तो आज जूते खाने की नौबत तो न आती।

रुपैया : अरे पहले मिल जाता तो और बात थी लेकिन अब मिला हूं तो वुळछ फ़ळायदा नहीं है।

दवावाला : क्या मतलब?

रुपैया : मतलब यह कि मेरी औवळात वुळछ नहीं रह गई।

दवावाला : औवळात नहीं रह गई! इसका क्या मतलब हुआ?

रुपैया : मतलब यह कि मेरा मोल कम कर दिया गया है।

दवावाला : मोल कम कर दिया है। किसने किया और क्यों किया?

रुपैया : तू जानना चाहता है मेरा मोल किसने कम किया है?

दवावाला : हां।

रुपैया : तो आ, मैं तुझे ले चलता हूं उन लोगों वेळ पास जिन्होंने हमसे वादा किया था कि सिर्फ़ळ सौ दिनों में हर चीज़ की वळीमत घट जाएगी, परेशानियों की छत फट जाएगी। देश में सब ख़ुशहाल होंगे मालामाल होंगे। बस इनवेळ गद्दी पर बैठने भर की देर थी।

दवावाला : कौन? वो हाथ वाले!

रुपैया : हां हाथ वाले और उनवेळ आवळा।

दवावाला : आवळा। वो कौन हैं?

रुपैया : चल मेरे साथ। मैं तुझे दिखाता हूं कि सियासत वेळ उन बंद कमरों में क्या होता है। ▯*दोनों जाते हैं। आई.एम. एप़ळ., प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री आते हैं।*▯

प्रधानमंत्री/

वित्तमंत्री : आव़ळा, हुज़ूर माईबाप! आप तीसरी दुनिया वेळ अन्नदाता हैं। ग़रीब देशों वेळ विधाता हैं। हम पर संकट है, देश की बुरी गत है। बचाओ-आव़ळा-बचाओ!

आई.एम.एप़ळ.: *;चौंककरद्ध* ए-तुम लोग कौन है? क्यों शोर मचाता है? हमारे काम में हर्जा करता है।

मन्नू : सर माईसेल्प़ळ मन्नू। मन्नू मोहन सिंह और यह हैं मेरे दोस्त मिस्टर आओ।

आई.एम.एप़ळ.: हाओ?

मन्नू : नॉट हाओ, आओ।

आई.एम.एप़ळ.: ओ आओ। वैरी ग्लैड टू मीट यू।

आओ : आव़ळा हम हिंदुस्तान से, इंडिया से आया है। हमें कर्ज़ा चाहिए।

आई.एम.एप़ळ.: हिंदुस्तान से आया, कर्ज़ा लेने। मिलेगा। बोलो तुमको कितना कर्ज़ा मांगता है।

दोनों : *;प्रधानमंत्री अपने अंगवस्त्रम् को पैळलाता है।द्ध* हुज़ूर इतना।

आई.एम.एप़ळ.: इतना कंगाल देश का होने वेळ बावजूद आपका इतना हिम्मत हमसे इतना सारा लोन मांगता है।

दोनों : तो हुज़ूर थोड़ा कम कर दीजिए। ▯*अंगवस्त्रम् को आधा लपेट लेते हैं।*▯

आई.एम.एप़ळ.: ओवेळ! हमें मंज़ूर है। पर इसवेळ लिए आपको हमारा डॉल बनना पड़ेगा। डॉल का मतलब जानता है?

मन्नू : यैस सर गुड़िया। सर हम गुड़िया, बुढ़िया, पुड़िया सब वुळछ बनने को तैयार हैं सर। हम देश का सारा सोना बेच देंगे। देश को गिरवी रख देंगे। बस हमारा दोस्त मि. आओ गद्दी पर बना रहना चाहिए। आपवेळ लिए भी और हमारे लिए भी।

आई.एम.एप़ळ.: यह सब हमको मत बताओ। डांस करेगा?

आओ : यैस सर। सर हमको डांस बहुत पसंद है। जब हम इलैक्शन वैळम्पेन पर जाता है तो आदिवासी वेळ साथ हम बहुत डांस करता है।

आई.एम.एप़ळ.: हम काला लोग वेळ डांस की बात नहीं करता है। हमारे संगीत पर नाचेगा। बोलो।

आओ : यैस सर हमको डिस्कोडांस, रैपडांस, ब्रेक डांस, स्लैम डांस, डरटी डांस सब आता है।

आई.एम.एप़ळ.: ओ! हमको यह सब नहीं मांगता है। हमारे डांस का नाम है कठपुतली का डांस। करेगा?

आओ : सर कर्ज़ा मिलेगा तो सब करेगा।

आई.एम.एप़ळ.: वैरी गुड। और अगर कर्ज़ा नहीं मिलेगा तो।

मन्नू : तो भी करेगा सर, तो भी करेगा।

आई.एम.एप़ळ.: वैरी गुड! दैट्स व्हाई आई लाइक यू।

▯*आई.एम.एप़ळ. एक रस्सी निकालता है। दोनों वेळ गले में डालकर गाना गाता है और उन्हें नचाता है।*▯

बोल मन्नू बोल, रॉक एंड रोल
संग संग डोल, रॉक एंड रोल
आओ तुम भी गाओ मत घबराओ
आई.एम.एप़ळ. का बजता ढोल, रॉक एंड रोल...
शर्तें हमारी करोगे गर पूरी,
हम समझेगा तुम्हारी मजबूरी
कर्ज़ा देगा दिल को खोल, रॉक एंड रोल...
सबसे पहले रुपये को नचाओ,
उसका व़ळद तुम जल्दी घटाओ
उसवेळ बाद करेगा कोई कौल, रॉक एंड रोल...

▯*रुपैया आता है।*▯

रुपैया : सुन लो भैया मैं हूं रुपैया,
सपेरे की बीन पे करूंगा ता ता थैया
नहीं करूंगा मैं रॉक एंड रोल...

आओ/मन्नू : सुन बे रुपैये तू बांका जवां है
पर नहीं तुझे इस बात का गुमां है
आज से तेरा छः पैसा है मोल▯रॉक एंड रोल...

▯*रुपैया को धक्का देकर बाहर करते हैं।*▯

आई.एम.एप़ळ.: अब नहीं सब्सिडी रहेगी जारी
जनता को सहनी पड़ेगी दुश्वारी
राशन पानी कर दो गोल▯रॉक एंड रोल...
बेच डालो कंपनियां सरकारी
होने दो छंटनी बढ़े बेकारी
होने न पाए हल्ला बोल-रॉक एंड रोल...

▯*तीनों जाते हैं। रुपैया और दवावाला आते हैं।*▯

दवावाला : क्या नाचते हैं उस्ताद। गोविंदा और मिथुन को भी पे़ळल कर दिया।

रुपैया : नाचते तो हैं प्यारे। मगर जनता वेळ पेट पर, मेरे सर पर, मज़दूर की मज़दूरी पर और बाबू की नौकरी पर। इसे कहते हैं कंगाली डांस।

दवावाला : अरे वो सब तो ठीक है पर यह बता कि जो इन्हें नचा रहा था वो कौन था?

रुपैया : उसे नहीं पहचाना तूने!

दवावाला : नहीं।

रुपैया : वो था अमरीका का पिट्ठू आई.एम.एप़ळ. यानी

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष।

दवावाला : यह क्या चीज़ होती है?

रुपैया : यह वो चीज़ है जिसकी वजह से तेरी छंटनी हुई पड़ी है और हमारे देश में कंगाली डांस का दौर चला हुआ है।

दवावाला : पर वो तो कह रहा था कि जितना चाहे कर्ज़ा ले जाओ बस डांस करना पड़ेगा।

रुपैया : अबे तू उसवेळ कर्ज़े की असलियत नहीं जानता। उसने हमारे मुल्क वेळ सामने एक शर्त रखी थी कि हमारी सरकार अपने ख़र्चे कम कर दे और कर्ज़ा ले जाए।

दवावाला : हां तो इसमें क्या है। ख़र्चे कम कर दो।

रुपैया : अबे इसका मतलब जानता है!

दवावाला : नहीं।

रुपैया : इसका मतलब होगा सैकड़ों सरकारी कारख़ाने बंद। लाखों मज़दूर बेकार। और तो और सरकारी कर्मचारियों की भी छुट्टी।

दवावाला : अबे रहने दे। ऐसा भी कहीं होता है।

रुपैया : तुझे यव़ळीन नहीं आता तो चल मेरे साथ दफ़्तर। मैं तुझे दिखाता हूं कि बाबूजी वेळ क्या हाल हैं। *[दोनों जाते हैं। एक कोने से मालिक उठता है दूसरे से बाबूजी। दोनों में टेलीफ़ळोन पर बात होती है।]*

बाबूजी : सुबह फ़ळोन, शाम को फ़ळोन। हैलो, कौन है बे?

अफ़ळसर : ओमप्रकाशजी?

बाबूजी : यैस सर!

अफ़ळसर : देखिए ओमप्रकाशजी मिनिस्ट्री से आडर्ज़ आ गए हैं, जितना फ़ळालतू स्टाफ़ळ है उनकी छुट्टी कर दी जाए। जो लोग ५५ साल से ऊपर हैं उन्हें रिटायर कर दिया जाए। और जो कांट्रेक्ट वर्वळर्स हैं उन्हें निकाल दिया जाए। *[बाबूजी हर बात पर हां करते हैं।]*

बाबूजी : लेकिन सर मैं तो कहीं फालतू नहीं हूं।

अफ़ळसर : ओमप्रकाशजी आपकी उम्र क्या है?

बाबूजी : जी अगले महीने ५५ का हो जाऊंगा।

अफ़ळसर : ओमप्रकाशजी। इस बारे में आपसे कल बात करेंगे। वैसे आडर्ज़ बहुत स्ट्रिक्ट हैं।

[अफ़ळसर जाता है। बाबूजी फ़्रीज़। रुपैया और दवावाला आते हैं।]

रुपैया : अब तक तो मज़दूर वेळ घर में रहती थी लाचारी
अब बाबू वेळ घर आ पहुंची छंटनी और बेकारी
होगी अब इनकी छुट्टी जी हाथ मिला वेळ वुळट्टी जी...

बाबूजी : रुपैया भैया। अब यहां वुळछ नहीं रखा चल घर चलते हैं। वो देख बस आ रही है। जल्दी से चढ़ जाना। *[दो पात्र एक हरे कपड़े से बस बनाते हैं।]* रुपैया जल्दी आ जा!

रुपैया : चाचा इस बस से उतर आओ। मैं तुम्हें इसमें सफ़ळर नहीं करवा सकता।

बाबूजी : क्यों?

रुपैया : यह ग्रीन लाइन स्पेशल है। इसका किराया मेरे बस की बात नहीं है।

बाबूजी : अच्छा वो देख दूसरी बस आ रही है। अबकी ना मत करियो। *[दो पात्र हाथ में पीला कपड़ा लेकर बस बनाते हैं।]* आ जा रुपैया।

रुपैया : इसमें से भी उतर आओ चाचा।

बाबूजी : अब क्या हुआ? *[बस चली जाती है।]*

रुपैया : यह लिमिटेड स्पेशल थी। इसका किराया भी मेरे बस की बात नहीं है।

बाबूजी : इसका मतलब रोज़ घर तक व़ळदम ताल।

रुपैया : और क्या। *[बाबूजी सर थामकर रह जाते हैं। रुपैया गाता है।]*
अब तक तो मज़दूर करे था साइकिल की सवारी
पड़ गई देखो अब बाबू को ग्रीनलाइन भी भारी
भैया अब सेहत बनाओ रे पैदल आओ-जाओ रे...

दवावाला : कह दे कह दे यह भी आई.एम.एफ़ळ. की वजह से हुआ है। तेरा इसमें कोई व़ळसूर नहीं है।

रुपैया : हां-हां यह भी आई.एम.एफ़ळ. की वजह से हुआ है। सरकार को कर्ज़ा मिला ही तब है जबकि सरकार ने जनता को रियायत देने वाली हर चीज़ पर कटौती करना मंजूर कर लिया है। ताकि आई.एम.एफ़ळ. वेळ लोन का सूद चुकाया जा सवेळ। इसका असर पड़ेगा किसानों को मिलने वाली खाद पर। दवाओं वेळ दाम बढ़ जाएंगे, रेल वेळ भाड़े बढ़ जाएंगे, बसों का किराया बढ़ जाएगा, राशन वेळ दाम बढ़ जाएंगे। अबे वुळल मिलाकर यह कि महंगाई आसमान छूने लगेगी।

दवावाला : अब बस कर यार। तुझे एक मौव़ळा दो तो नेताओं की तरह भाषण झाड़ने लगता है। यह बता बाबूजी घर पहुंचे या नहीं।

रुपैया : बाबूजी घर पहुंच गए। चल तुझे भी बाबूजी वेळ घर ले चलता हूं। आज पहली तारीख़ है। बाबूजी मुझे लेकर घर आए हैं। और चाची मुझे लेकर बाज़ार जाएगी।

बाबूजी : आ जा रुपैया भैया। *[दोनों घर पहुंचते हैं।]* अरे सुनती हो। देखो कौन आया है।

चाची : आती हूं। हाय राम! यह इसे क्या हो गया? इसका व़ळद वैळसे छोटा हो गया। ज़रूर उस धनीराम बनिए की करतूत होगी।

रुपैया : नहीं चाची यह किसी ऐसे-वैसे बनिए की करतूत नहीं

है। इस बार तो मुझे अंतर्राष्ट्रीय बनिए ने छोटा किया है। नाम जानती है उसका आई.एम.एफ़ळ. यानी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष।

चाची : अच्छा, अच्छा बस कर! वळद क्या छोटा हो गया है ज़बान लंबी हो गई है। जल्दी चल राशन लेकर आना है। *;बाबूजी सेद्ध* आप वहां खड़े-खड़े क्या कर रहे हैं राशन नहीं लाना है क्या! *□तीनों दायरे का आधा चक्कर लेते हैं। फ्रीज़। बावळी पात्र राशन की लाइन में लगते हैं।□*

बाबूजी : *;रुपैये और चाची सेद्ध* तुम लोग यहीं ठहरो मैं अभी पता करवेळ आता हूं। *;राशन की लाइन में आगे बढ़ता है।द्ध*

शहरी-२ : अबे ओ अमिताभ बच्चन की औलाद लाइन में आजा।

बाबूजी : गाली क्यों देता है।

शहरी-६ : हां साहब लाइन में आइए।

बाबूजी : भई मैं तो सिर्फ़ळ इतना जानना चाहता था कि राशन में है क्या-क्या।

शहरी-२ : चावल है, गेहूं है और चीनी तो है ही नहीं।

बाबूजी : और दे कितना रहा है?

शहरी-६ : गेहूं एक यूनिट में पचहत्तर ग्राम और चावल एक यूनिट में साठ ग्राम और दाम सामने लिखे हुए हैं पढ़ लीजिए।

बाबूजी : अरे बाप रे दाम इतने ज़्यादा और चीज़ें इतनी कम! यह तो ऊंट वेळ मुंह में ज़ीरा है।

शहरी-२ : अरे शुक्र मनाओ कि इतना मिल रहा है। कल वो भी नहीं मिलेगा। आई.एम.एफ़ळ. का दौर है आई.एम.एफ़ळ. का।

बाबूजी : *;चौंककरद्ध* अरे लाला वो बोरियां कहां ले जा रहा है। *□बावळी पात्र शोर मचाते हुए बाहर जाते हैं।□*

बाबूजी : धत् तेरे की! राशन भी नहीं मिला। अब क्या करें?

चाची : करना क्या है? लाला की दुकान पर चलते हैं। उसवेळ अलावा कोई चारा नहीं है। *□तीनों दुकान पर पहुंचते हैं। लाला आता है।□*

चाची : लालाजी, ओ लालाजी।

लाला : आ गई बहिनजी। वह रुपैया महाशय कहीं नज़र नहीं आ रहे। ऐं-ओ हो तो यहां छिपे बैठे हैं साड़ी वेळ पल्लू में।

चाची : आप सामान की लिस्ट लिख लीजिए। एक किलो राजमा, दो किलो अरहर की दाल, दो किलो मसूर की दाल।

रुपैया : चाची रुक जा वुळछ मेरी भी सुन ले।

चाची : चुप रह। हां लालाजी, एक कोलगेट जेल, दो किलो धारा, दो पैवेळट निरमा, तीन लिरिल।

रुपैया : चाची रुक जा क्यों अपनी और मेरी बेइज़्ज़ती करवाने पर तुली है।

चाची : चुप रह। *;अपने पति सेद्ध* आप वहां खड़े-खड़े क्या कर रहे हैं। रोकते क्यों नहीं इसे। *□बाबूजी रुपैये का मुंह बदंकर देते हैं। चाची एक सांस में पूरी लिस्ट पढ़कर शांत होती है।□*

चाची : सामान बंधवा दीजिए और कितने पैसे हुए?

लाला : अभी बताता हूं बहिनजी *;पैसे जोड़ता हैद्ध* वुळल मिलाकर हुए दो सौ तिरानवे रुपये पचास नए पैसे।

चाची : *;पति सेद्ध* इसे तिरानवे रुपये पचास पैसे दे दो।

लाला : बहिनजी क्यों मज़ाक कर रही हैं। धनीराम का हिसाब बिल्वुळल पक्का है। दो सौ तिरानवे रुपये पचास पैसे।

चाची : पर पिछले महीने तो सारा सामान तिरानवे रुपये पचास पैसे में आ गया था।

लाला : हम क्या करें बहिनजी। सरकार ने ही दाम बढ़ा दिए हैं। हर चीज़ इतनी महंगी हो गई है कि चीज़ें बेचने में अब पहले जैसा मज़ा नहीं रहा।

बाबूजी : पर इतने पैसे तो हैं नहीं हमारे पास।

लाला : अरे भाई इतने लोग खड़े हैं यहां पर किसी से भी कर्ज़ा ले लो। यह तो आई.एम.एफ़ळ. का दौर है। ला छोटू सामान ले आ।

चाची : तो लालाजी, सारा सामान आधा कर दीजिए। और वो कोलगेट जैल भी निकाल दीजिए। दांत कोयले से ही मांझ लेंगे।

लाला : छोटू यह राजमा आधी कर दे, मसूर भी आधी कर दे, कोलगेट निकाल दे और यह धारा भी निकाल दे।

बाबूजी : धारा निकाल दोगे तो सब्ज़ी किसमें बनाएंगे?

लाला : तो भैया रोटी चटनी से खा लेना। *□लाला सामान देता है। बाबूजी और चाची जाते हैं। पीछे-पीछे रुपैया भी जाने लगता है।□*

अरे आप कहां चले रुपैया महाशय आपकी जगह तो इस गल्ले में है। *□लाला बैठता है।□*

रुपैया : देखा आपने-

अब तक तो मज़दूर वेळ घर में रहती थी कंगाली
अब बाबू वेळ घर पर दस्तक देती है बदहाली
खालो अब रोटी सूखी जी, जनता खड़ी देखो भूखी जी...

;दवावाले सेद्ध देखा। आई.एम.एफ़ळ. का कमाल!

दवावाला : सचमुच बहुत बुरे हैं हाल। अब तो सोचता हूं कि रामबाण ही ईजाद कर लेता तो कितना अच्छा रहता।

रुपैया : सपने देखना छोड़ दे।

दवावाला : वो क्यूं?

रुपैया : सपने बहुत महंगे हो गए हैं।

दवावाला : क्या बात कर रहा है।

रुपैया : तुझे नहीं मालूम आई.एम.एफ़. के दौर के चलते प्यार, मुहब्बत, इश्क़, जज़्बात सब महंगा हो गया है।

दवावाला : क्यों मज़ाक करता है। इश्क़ भी कहीं महंगा होता है?

रुपैया : तुझे यक़ीन नहीं आता? तो चल मैं तुझे दिखाता हूं कि आजकल इश्क़ करने वालों के क्या हाल हैं। *(दोनों बैठते हैं। मंजू गालियां देती हुई आती है।)*

मंजू : समझता क्या है अपने आपको। दादागीरी जताता है। गुंडागर्दी मचा रखी है? सामान बाहर फेंक देगा। *(दर्शकों से)* देखिए न भाईसाहब हर तीन महीने बाद मुंह फाड़े खड़ा हो जाता है किराया बढ़ाओ। मैं कहती हूं नहीं बढ़ाती मैं किराया। क्या कर लेगा? *(सुरेश आता है।)*

सुरेश : क्या हो गया मंजू? क्यों गला फाड़ रही है? मैं तो भला चंगा हूं।

मंजू : आया था वो बंसी। अम्मा को धमकी दे गया है किराया नहीं बढ़ाया तो सामान बाहर फेंक देगा। सूअर कहीं का।

सुरेश : अरे तू क्यों अपना मूड ख़राब करती है। बंसी से तो मैं निपट लूंगा। देख आज मैंने फ़ैक्ट्री से पच्चीस रुपये कमाए हैं। चल कहीं घूमने चलते हैं।

मंजू : हाय! तू कितना अच्छा है। बोल कहां चलें?

सुरेश : देख, प्लाज़ा पर नरसिम्हा लगी हुई है। देखेगी।

मंजू : डिंपल वाली। चल न जल्दी चल। *(दोनों हाथ में हाथ डालकर दायरे का चक्कर लेते हैं।)*

सुरेश : अरे मंजू सुन। तूने अम्मा से बात की।

मंजू : हां वह तो मैं रोज़ करती हूं।

सुरेश : तू सीधे मुंह बात नहीं कर सकती।

मंजू : नहीं। *(मुंह बनाकर कहती है।)*

सुरेश : ओ हो मंजू तंग मत कर।

मंजू : इसमें बात ही क्या करनी है। यही तो कहना है न कि मेरे लिए लड़का मत ढूंढ़ो। मैंने खुद ही पसंद कर लिया है। एक आवारा को, नाम है सुरेस।

सुरेश : तू तो ऐसे बात कर रही है जैसे तुझे डर ही न लगता हो।

मंजू : इसमें डरने की क्या बात है?

सुरेश : हां, तू तो रानी लक्ष्मीबाई की क्लासफ़ैलो थी।

मंजू : चल न फ़िल्म दिखा, देर हो जाएगी। *(दोनों रुकते हैं। दो पात्र एक कपड़े से खिड़की बनाते हैं। तीसरा पात्र काउंटर पर आकर बैठता है।)*

सुरेश : मंजू तू यहीं ठहर मैं अभी टिकट लेकर आता हूं। *(टिकटवाले से)* दो टिकट बालकोनी के देना भाई।

टिकटवाला : सोलह रुपये और दीजिए।

सुरेश : अरे दिए तो हैं बीस रुपये अभी।

टिकटवाला : हां तो सोलह रुपये और दीजिए आपको मालूम नहीं टिकट का रेट बढ़ गया है।

सुरेश : पर कुछ दिन पहले तो मैंने वो फ़िल्म देखी थी 'रोटी कपड़ा और मकान' तब तो बीस रुपये में आ गए थे।

टिकटवाला : आपको टिकट लेनी है तो सोलह रुपये और दीजिए वर्ना खिड़की न ब्लाक कीजिए। हवा आने दो। अबे तेरे पास पैसे नहीं थे तो यहां क्यूं आए। ले जाना था किसी पार्क में।

सुरेश : ओए तमीज़ से बातकर। ला मेरे पैसे वापस कर। आया बड़ा सलाह देने वाला।

(तीनों पात्र बैठते हैं।)

सुरेश : मंजू-मंजू वो टिकटवाला कह रहा था नरसिम्हा न बहुत ही घटिया फ़िल्म है। पिट गई है। हम ऐसा करते हैं किसी पार्क में चलते हैं।

मंजू : हां, कल और कमाकर लाइयो फिर जाएंगे तेरे पारक में मूंगफली खाने। *(भुनभुनाती हुई चली जाती है। पीछे-पीछे सुरेश भी जाता है।)*

दवावाला : अरे रोको कोई उसे! मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था भाई साहब! मेरी मीता मुझे सिर्फ़ पांच रुपये के लिए छोड़कर चली गई थी। *(रुपये से)* पर एक बात तो बता क्या इनकी शादी नहीं हो पाएगी? क्या इनकी जोड़ी भी महंगाई की वजह से टूट जाएगी? बता न, बता न यार।

रुपैया : सब्र करो मैं दिखलाता हूं, अब आगे की बात
महंगाई में ख़त्म हो गए, इंसानी जज़्बात
चुपचाप देखो शादी रे, लुटेरे अब बने बाराती रे

(पंडित और लड़की का बाप आते हैं।)

पंडित : ओम भूर्भुव स्वः... मेरी दक्षिणा याद है न?

बाप : हां पंडितजी चार किलो गेहूं और एक किलो चीनी।

पंडित : और दो किलो चावल!

बाप : पंडितजी चावलों का तो इंतज़ाम हो नहीं सका, उसके बदले आप दो सौ रुपये नक़द ले लीजिए।

पंडित : न भैया हमें तो दो किलो चावल ही चाहिए। ओम भूर्भुव स्वः... वर और कन्या को बुलाइए।

बाप : पंडितजी कन्या तो है। *(मंजू अपनी मां के साथ आती है।)* पर वर का पता नहीं है। *(सुरेश और उसके साथी भागते हुए आते हैं।)*

सुरेश : माफ़ करना पंडितजी। जेब में बस का भाड़ा नहीं था

न इसलिए मंगोलपुरी से पैदल आ रहा हूं।

पंडित : चिंता मत करो वत्स हमें भी जमनापार पैदल ही जाना है। ओम भूर्भुव स्वः... वर वेळ हाथ में कन्या का हाथ दीजिए। *;बाप सेद्ध* पूजा की सामग्री लाइए। *;पंडित वर कन्या वेळ हाथ में एक चम्मच घी डालने का अभिनय करता है।द्ध* यह लीजिए एक चम्मच घी। अब इसे अग्नि में... नहीं मेरी दक्षिणा में डाल दीजिए। *;बाप सेद्ध* वर और कन्या का मुंह मीठा करवाओ। ओम...

बाप : पंडितजी मीठा तो वुळछ है नहीं। वो आपकी दक्षिणा वाली चीनी में से करा दूं।

पंडित : ना भैया ना दूर से दिखा भर दीजिए। काम चल जाएगा। अब चावल वेळ थाल को लाइए... चावल वेळ छींटे देने हैं। *[जैसे ही पंडितजी चावल वेळ छींटे देते हैं बारातियों में चावल लूटने की होड़ मच जाती है। उसमें पंडित भी शामिल है। दवावाला चीख़ता है। सब फ़्रीज़ होते हैं।]*

दवावाला : बंद करो यह सब। वुळत्ता बना दिया है महंगाई ने तुम सबको। *;रुपये सेद्ध* नहीं सुननी तुम्हारी कहानी।

[मज़दूर नेता नारे लगाती हुई आती है। सब जुलूस बनाकर उसवेळ पीछे चलते हैं। और दायरे में नेता की तरफ़ळ मुंह करवेळ बैठते हैं।]

मज़दूर नेता : साथियो। आप जो मज़दूर हैं, कारीगर हैं, खौंमचा लगाते हैं, रिक्शा चलाते हैं, छोटे दुकानदार हैं या मध्यमवर्गीय नौकरी पेशा कर्मचारी हैं, आप पर, हम सब पर महंगाई की मार है। सरकार ने राशन वेळ दाम से लेकर, बच्चों की फ़ळीस, ट्रेन का भाड़ा, बसों का किराया सब वुळछ बढ़ा दिया है। नौकरी से बरख़ास्त करने की धमकी दे रही है। लेकिन साथियो क्या हम इसे चुपचाप सहेंगे?

दवावाला : *;टोकता हैद्ध* नहीं। हम इसे चुपचाप नहीं सहेंगे। जानवर समझ रखा है उन्होंने हमें। सोचते हैं हम सब वुळछ चुपचाप बर्दाश्त कर लेंगे। जीना है तो लड़ना होगा। *[नेता वेळ पास जाता है उसवेळ हाथ से झंडा छीन लेता है।]* साथियो हम लड़ेंगे।

दवावाला : महंगाई को दूर करो

सब : हमको सस्ता राशन दो

दवावाला : जमाख़ोरी को ख़त्म करो

सब : गांव-गांव में राशन दो

[नारे लगाते हुए सभी पात्र जुलूस बनाते हैं। आगे दवावाला है।]

o